रविवार 28 नवंबर, 2021

विषय — प्राचीन और आधुनिक काला जादू, उपनाम कृत्रिम निद्रावस्था और हाइपोहान

स्वर्ण पाठ: रोमियो 13 : 1

"क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो।"

उत्तरदायी अध्ययन: निर्गमन 20 : 1-6

1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है॥
3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥
4 तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।
5 तू उन को दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते है, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं,
6 और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करूणा किया करता हूं॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 28 : 1-3, 6, 7, 14

1 यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूं, चौकसी से पूरी करने का चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ट करेगा।
2 फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आर्शीवाद तुझ पर पूरे होंगे।
3 धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में।
6 धन्य हो तू भीतर आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते समय।
7 यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएंगे; वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे, परन्तु तेरे साम्हने से सात मार्ग से हो कर भाग जाएंगे।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

14 और जिन वचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं उन में से किसी से दाहिने वा बाएं मुड़के पराये देवताओं के पीछे न हो ले, और न उनकी सेवा करे॥

2. यशायाह 8: 19 (*से 1st?*)

19 जब लोग तुम से कहते हैं कि ओझाओं और टोन्हों के पास जा रहे हैं पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं, तब तुम यह कहते हो कि क्या प्रजा को अपने भगवान ही के पास जा कर न पूछना चाहिए?

3. 1 शमूएल 28: 3-8, 11-13 (*से :*), 14 (और शाऊल)-18 (*से 1st,*)

3 शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्राएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामा में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओझों और भूतसिद्धि करने वालों को देश से निकाल दिया था॥
4 जब पलिश्ती इकट्ठे हुए और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली।
5 पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो कांप उठा।
6 और जब शाऊल ने यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उस उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा।
7 तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, मेरे लिये किसी भूतसिद्धि करने वाली को ढूंढो, कि मैं उसके पास जा कर उस से पूछूं। उसके कर्मचारियों ने उस से कहा, एन्दोर में एक भूतसिद्धि करने वाली रहती है।
8 तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहिनकर, दो मनुष्य संग ले कर, रातोंरात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूंगा उसे बुलवा दे।
11 स्त्री ने पूछा, मैं तेरे लिये किस को बुलाऊ? उसने कहा, शमूएल को मेरे लिये बुला।
12 जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई।
13 राजा ने उससे कहा, मत डर।
14 तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिर के दण्डवत किया।
15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है? शाऊल ने कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वपनों के; इसलिये मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं।
16 शमूएल ने कहा, जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझ से क्यों पूछता है?
17 यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहलावाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है; अर्थात उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।
18 तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया।

4. लूका 4 : 14 (*से* आत्मा)

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा को लौटा...।

5. लूका 8 : 27 (और) *केवल*, 27 (वहां)-35

26 फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जो उस पार गलील के साम्हने है।
27 जब वह किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में दुष्टात्माएं थीं और बहुत दिनों
से न कपड़े पहिनता था और न घर में रहता था वरन कब्रों में रहा करता था।
28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा; हे परम प्रधान परमेश्वर के
पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम! मैं तेरी बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे!
29 क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिये कि वह उस पर
बार बार प्रबल होती थी; और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेडिय़ों से बांधते थे, तौभी वह बन्धनों को
तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाये फिरती थी।
30 यीशु ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उसने कहा, सेना; क्योंकि बहुत दुष्टात्माएं उसमें पैठ गईं थीं।
31 और उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे।
32 वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने
दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया।
33 तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में गईं और वह झुण्ड कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा
गिरा और डूब मरा।
34 चरवाहे यह जो हुआ था देखकर भागे, और नगर में, और गांवों में जाकर उसका समाचार कहा।
35 और लोग यह जो हुआ था उसके देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं
निकली थीं, उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए।

6. यूहन्ना 8 : 12

12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।

7. लूका 21 : 8

8 उस ने कहा; चौकस रहो, कि भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूं; और यह भी कि समय निकट आ पहुंचा है: तुम उन के पीछे न चले जाना।

8. यूहन्ना 10 : 14, 27, 28 (और वे)

14 अच्छा चरवाहा मैं हूं; मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं।

27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 ... और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 497 : 5-8 (हम)

हम स्वीकार करते हैं और एक परम और अनंत भगवान को मानते हैं। हम उसके पुत्र, एक मसीह को स्वीकार करते हैं; पवित्र भूत या दिव्य दिलासा देने वाला; और मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में है।

2. 183 : 21-23

डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है।

3. 7 : 17-20

भगवान की अज्ञानता अब विश्वास के रास्ते का पत्थर नहीं है। आज्ञाकारिता का एकमात्र ज़मानता उसी की एक सही आशंका है जिसे जानने के लिए जीवन अनन्त है।

4. 239 : 16-22

अपनी प्रगति का पता लगाने के लिए, हमें सीखना चाहिए कि हमारे संबंध कहां रखे गए हैं और जिन्हें हम स्वीकार करते हैं और भगवान के रूप में मानते हैं। यदि ईश्वरीय प्रेम हमारे निकट, प्रिय, और अधिक वास्तविक होता जा रहा है, तो यह बात आत्मा को सौंप रही है। जिन वस्तुओं का हम पीछा करते हैं और जो आत्मा हम प्रकट करते हैं वह हमारे दृष्टिकोण को प्रकट करती है, और दिखाती है कि हम क्या जीत रहे हैं।

5. 25 : 13-16, 17-19

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। ... परमेश्वर की आज्ञाकारिता के द्वारा, उसने आध्यात्मिक रूप से सभी दूसरों के सिद्धांत का प्रदर्शन किया।

6. 410 : 14-21

ईश्वर में हमारी आस्था का हर परीक्षण हमें मजबूत बनाता है। आत्मा से पार पाने के लिए भौतिक स्थिति जितनी कठिन लगती है, उतनी ही मजबूत हमारे विश्वास और हमारे प्रेम को शुद्ध करना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना कहता है:

"प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, ... जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।" यहाँ क्रिश्चियन साइंस की एक निश्चित और प्रेरित घोषणा है।

7. 102 : 30-32 (*से* ,)

मानव जाति को सीखना चाहिए कि बुराई शक्ति नहीं है। इसकी तथाकथित निरंकुशता है, लेकिन कुछ भी नहीं है। क्रिश्चियन साइंस बुराई के साम्राज्य को दूर करता है,

8. 103 : 18-23 (*से 2nd* .), 29-2

जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में नाम दिया गया है, पशु चुंबकत्व या हिप्नोटिज्म त्रुटि, या नश्वर मन के लिए विशिष्ट शब्द है। यह गलत धारणा है कि मन पदार्थ में है, और यह बुराई और अच्छा दोनों है; यह बुराई उतनी ही वास्तविक है जितनी अच्छी और अधिक शक्तिशाली। इस विश्वास में सत्य का एक गुण नहीं है। यह या तो अज्ञानी है या दुर्भावनापूर्ण।

वास्तव में कोई नश्वर मन नहीं है, और परिणामस्वरूप नश्वर विचार और इच्छा-शक्ति का कोई संक्रमण नहीं है। जीवन और अस्तित्व ईश्वर के हैं। क्राइस्टियन साइंस में, मनुष्य कोई नुकसान नहीं कर सकता, क्योंकि वैज्ञानिक विचार सच्चे विचार हैं, भगवान से मनुष्य के लिए गुजर रहे हैं।

9. 151 : 20-30

वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है। मानव मन को मारने या ठीक करने की कोई शक्ति नहीं है, और इसका भगवान के आदमी पर कोई नियंत्रण नहीं है। वह दिव्य मन जिसने मनुष्य को बनाया, वह अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है। मानव मन भगवान के विपरीत है और इसे बंद करना चाहिए, जैसा कि सेंट पॉल ने घोषित किया है। वह सब जो वास्तव में मौजूद है, वह दिव्य मन और उसका विचार है, और इस मन में संपूर्ण प्राणी सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाया जाता है। सीधे और संकीर्ण तरीके से इस तथ्य को देखना और स्वीकार करना है, इस शक्ति से उपजें, और सच्चाई के अग्रणी का पालन करें।

10. 101 : 26-31

यदि पशु चुंबकत्व रोग को कम करने या ठीक करने के लिए लगता है, तो यह उपस्थिति भ्रामक है, क्योंकि त्रुटि त्रुटि के प्रभाव को दूर नहीं कर सकती है। त्रुटि के तहत बेचैनी आराम के लिए बेहतर है। किसी भी उदाहरण में पशु चुंबकत्व का प्रभाव नहीं है, जिसे भ्रम के प्रभाव के अलावा हाल ही में हिप्नोटिज्म कहा जाता है। इससे प्राप्त होने वाला कोई भी लाभ गूढ़ जादू में किसी के विश्वास के समानुपाती होता है।

11. 102 : 1-8, 16-23

पशु चुंबकत्व के पास कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, क्योंकि भगवान सभी को नियंत्रित करता है जो वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है, और उनकी शक्ति न तो पशु है और न ही मानव। विज्ञान पशु चुंबकत्व, मेस्मेरिज्म, या हिप्नोटिज्म में एक विश्वास और इस विश्वास जानवर होने का आधार एक नकारात्मकता है, जिसमें न तो बुद्धि, शक्ति, न ही वास्तविकता है, और इस अर्थ में यह तथाकथित नश्वर मन की एक अवास्तविक अवधारणा है।

पशु चुंबकत्व के हल्के रूप गायब हो रहे हैं, और इसकी आक्रामक विशेषताएं सामने आ रही हैं। अपराध के करघे, नश्वर विचार के अंधेरे अवकाश में छिपे हुए हैं, हर घंटे बुनाई जाले अधिक जटिल और सूक्ष्म हैं। इसलिए रहस्य पशु चुंबकत्व की वर्तमान विधियां हैं कि वे उम्र को अकर्मण्यता में बदल देते हैं, और उस विषय पर बहुत उदासीनता उत्पन्न करते हैं जो आपराधिक इच्छा करता है।

12. 288 : 9-14

अंधविश्वास और समझ कभी मिल नहीं सकते। जब क्रिश्चियन साइंस के अंतिम भौतिक और नैतिक प्रभाव पूरी तरह से प्राप्त होते हैं, सत्य और त्रुटि, समझ और विश्वास, विज्ञान और भौतिक अर्थों के बीच संघर्ष, भविष्यद्वक्ताओं द्वारा व्यक्त और यीशु द्वारा उद्घाटन किया गया, संघर्ष और आध्यात्मिक सद्भाव शासन करेगा।

13. 569 : 6-14

यह शास्त्र,"तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने," सचमुच पूर्ण होता है, जब हम सत्य की सर्वोच्चता के प्रति सचेत होते हैं, जिसके द्वारा त्रुटि की शून्यता दिखाई देती है; और हम जानते हैं कि त्रुटि की शून्यता उसकी दुष्टता के अनुपात में है। वह जो मसीह के वस्त्र के ऊपरी भाग को छूता है और अपने नश्वर विश्वासों, पशुता और घृणा में महारत हासिल करता है, उपचार के प्रमाण में आनन्दित होता है, - एक मधुर और निश्चित अर्थ में कि ईश्वर प्रेम है।

14. 568 : 24-30

एक पाप पर जीत के लिए, हम धन्यवाद देते हैं और मेजबानों के भगवान की महिमा करते हैं। सभी पापों पर शक्तिशाली विजय के बारे में हम क्या कहें? एक ऊँचा गीत, जो पहले से कहीं अधिक मधुर उच्च स्वर्ग तक पहुँच गया है, अब अधिक स्पष्ट और मसीह के महान हृदय के निकट आता है; क्योंकि दोष लगाने वाला वहां नहीं है, और प्रेम उसके आदिम और चिरस्थायी तनाव को दूर करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6